रुक जाना नहीं

तुम कहीं हार के...!

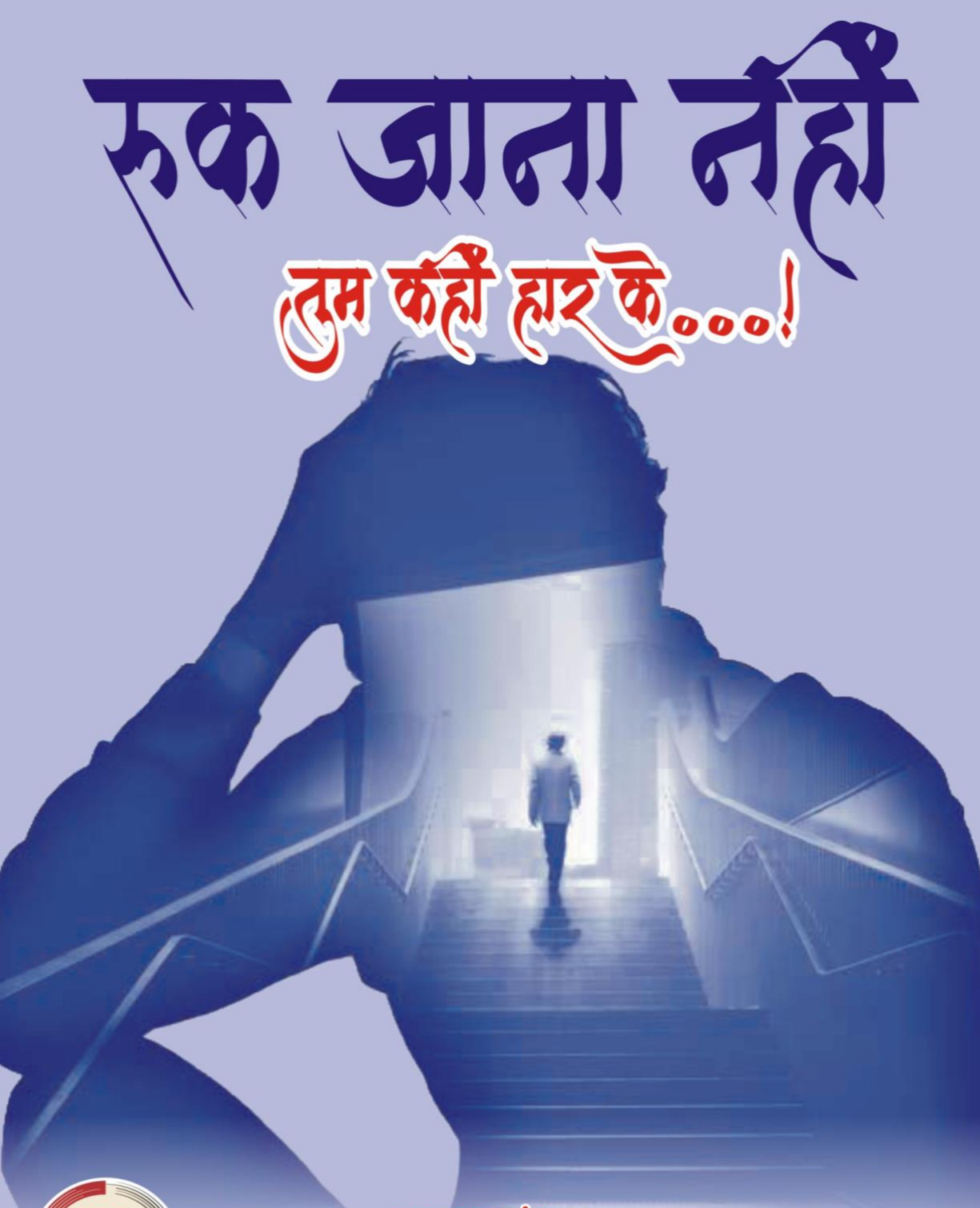

साझा संग्रह

संपादक – डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

रुक जाना नहीं,

तुम कहीं हार के,...!

(साझा संग्रह)

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-30-1
संपादक- प्रीति समकित सुराना
आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2021, साझा संग्रह
मूल्य- 250.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY ADITI RUSIA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

1.	**डॉ. प्रीति समकित सुराना**	4-12
2.	**दर्शन लीलानी**	13-24
3.	**डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई**	25-30
4.	**अदिति रूसिया**	31-36
5.	**मोनिका रूसिया**	37-42
6.	**प्रदीप कुमार अरोरा**	43-48
7.	**ऋतु कोचर**	49-54
8.	**अंजू भूटानी**	55-60
9.	**श्रीमति अनुजा दुबे**	61-66
10.	**डॉ. मीनाक्षी सुकुमारन**	67-72
11.	**किरण बिचपुरिया 'कशिश'**	73-78
12.	**लीना शर्मा**	79-84
13.	**सुश्री रमादेवी तेकाम**	85-90
14.	**अजय पाण्डेय 'बेबस'**	91-96

रुक जाना नहीं, तुम कहीं हार के,...!

आज के हालात, कोरोना महामारी का कहर, अपनों का जाना, आसपास मातम का माहौल निराशा को जन्म देता है। न चाहते हुए भी मन मे अवसाद और नकारात्मक विचार स्वतः प्रस्फुटित होते हैं।

इसी दौर में अन्तरा शब्दशक्ति ने सृजन को अपना धर्म मानते हुए रचनात्मकता कायम रखी और सभी दिवगंतों को श्रद्धांजलि स्वरुप सकारात्मक रचनाओं का एक गुलदस्ता **"रुक जाना नहीं, तुम कहीं हार के,...!"** समर्पित कर रहा है,...!

मुझे गर्व हो रहा है यह कहते हुए

कुछ तो बात है अन्तरा शब्दशक्ति के साथ साल के 52 सप्ताह, 52 सप्ताह में प्रति सप्ताह तीन दिन शब्द, पंक्ति या चित्र पर कविता लिखना यानि कम से कम 156 कविताएँ,..

प्रति सप्ताह नए विषय पर 500 शब्दों में एक आलेख यानि 52 आलेख कम से कम 156 पन्नों का गद्य लेखन,.. प्रति सप्ताह नए विषय पर एक कथा/ कहानी यानि 52 कथा/ कहानी, कम से कम 80 पन्नों का कहानियों का संकलन,.. साल में एक बार रचनाओं

की समीक्षा यानि कम से कम 16 पन्नों की सृजक सृजन समीक्षा पुस्तिका,.. महीने में कम से कम एक लाइव आयोजन,.. साल में 12 सरप्राइज साझा संकलन,.. साल में कम से कम 4 सम्मान समारोह, वो भी प्रकाशन योजना सहित,..! यानि एक रचनाकार के कम से कम 4 संकलन तैयार होने का पूरा अवसर! एक परिवार जैसा माहौल, मान-सम्मान, स्नेह, मित्रता, सकारात्मकता, रचनात्मकता, और सबसे महत्वपूर्ण अपने आपको एक पृथक पहचान देना!

पुस्तकों को राष्ट्रीय पुस्तकालय और अन्तरा शब्दशक्ति पुस्तकालय में संग्रहित करना यानि हमारी रचनाओं का सुरक्षित हो जाना,..!

हमारे बाद भी हमारा लिखा कहीं न कहीं तो होगा, कभी न कभी तो पढ़ा जाएगा, इतिहास गवाह है,.. टंकित शब्दों ने हमेशा कालचक्र की गवाही दी है,
इस तरह हम बन जाते हैं समय साक्षी,..!

कुछ तो बात है जो अन्तरा शब्दशक्ति को जीवित रखेगा सदा-सदा साहित्य की अनवरत यात्रा के लिए,..! साहित्यानुरागी स्वजनों, बस चलते रहना यूँ ही मेरे साथ मेरे सहयात्री बनकर,..!

संस्थापक
डॉ प्रीति समकित सुराना

रुक जाना नहीं तू कहीं हार के

जितना
मैं सोचती हूँ
मैं थक गई
बीमार हूँ
अब और नहीं!
होने लगती हूँ मायूस
किसी नए लक्ष्य के निर्धारण से पहले

उतना
मैं समझती हूँ
आराम जरूरी है
उपचार जारी है
रुकना कायरता है!
और देती हूँ दिलासा
नई डगर पर जाने से पहले

रुक जाना नहीं तू कहीं हार के
कांटो पे चल के मिलेंगे साये बाहर के
ओ राही! ओ राही,...!

ओ प्यारे मन

मत हो उदास
न हो निराश
समय बदलेगा
ओ प्यारे मन!

छोड़ चिंताएँ
हटेगी बाधाएँ
मिलेगी मंज़िल
ओ प्यारे मन!

समय बलवान
समय के साथ चल
होगा सफल
ओ प्यारे मन!

हिम्मत मत हार
खुद को संभाल
अंत भला ही होगा
ओ प्यारे मन!

तमस घनेरा छट जाएगा

तमस घनेरा छट जाएगा
नया सबेरा फिर आएगा

कहा समय ने ही ये मुझसे
बुरा समय है कट जाएगा

समय समय की है ये बातें
समय नया दिन खुद लाएगा

नहीं बदल पाया जीवन तो
समय ठहर कैसे पाएगा

कल फिर कल वो होगा जिसमें
नया सबेरा फिर आएगा

बुरा समय है कट जाएगा
तमस घनेरा छट जाएगा

इस दुनिया में

जीने के लिए कुछ भी नहीं चाहिए
सिवाय आत्मबल और आत्मविश्वास के
जिसके भीतर हों ये दो शक्तियां
खुद सारी दुनिया
आपके साथ चल पड़ती है
रह वही जाता है
जिसमें द्वेष, छल या कुटिलता हो।
किसी भी मनोरोगी की व्यथा सुन लेना
कोई न कोई तोड़ जाता है
आत्मबल और आत्मविश्वास
तभी होता है कोई दुर्बल,..!
मेरा व्यक्तिगत अनुभवजन्य आग्रह है
किसी कुत्सित मानसिकता के चलते
खुद को बरबाद मत करना
क्योंकि मर जाना कायरता है
और जीना इसी दुनिया में है।

तन्हाई ऐसी है

मानो
तारों से भरा आसमान हो
और जुगनुओं से भरी धरा
फिर भी रात
सिसकती सी, तड़पती सी,
बिल्कुल तन्हा
पर मन बहुत मजबूत है मेरा
कहता है
सपने बुन, मंज़िल चुन,
और चल उस राह पर
जिसमें सब साथ दें तो अच्छा
छोड़ दें तो
सिर्फ जुदाई का दर्द हो
ऑंसू बहा, मन का गुबार निकाल
पर रुक जाना नहीं तू कहीं हार के,
लक्ष्य तेरा है तुझे ही पूरा करना है
सच
मुझे बहकाती नहीं, संभाल लेती है,
हाँ! मेरी तन्हाई ऐसी है,..!

रात की रहगुज़र पर

सुनो!
हम-तुम
मुसाफ़िर हैं
ठहरना नहीं है हमें
रात की रहगुज़र पर
क्योंकि
मंज़िल तो सहर पर है
और
याद रहे
रात कितनी भी काली क्यों न हो
सुबह होती जरुर है,..!

इसलिए
रुक जाना नहीं,
तू कहीं हार के, राही ओ राही!

पहचान

पहचान अगर तेरी बन न सकी तो गम न कर,
कितने ही सितारों का जग में कोई नाम नही है।

कभी गौर करना जो जहां को करतें हैं रोशन,
उन चरागों तले रोशनी का कोई आयाम नहीं है।

सूरज हमेशा जलता ही रहता बुझता नहीं है,
उसके हिस्से में होती कभी कोई शाम नहीं।

आकाश, चांद, तारे, हवा और नदियों का जल,
सारे सृष्टि के रखवाले लेकिन कोई दाम नहीं।

तू कर कर्म अपने न भटक यूं अपने पथ से
फल की चिंता में रुक जाना वीरों का काम नहीं।

नाम- **दर्शन लीलानी**
पिता- सोभराज लीलानी
पता- सोम विला, १२४ त्रिवेणी कालोनी
एक्स्टेंशन माणिक बाग रोड़
इन्दौर ४५२००७
मो.- ९४२५४३२०००

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

काव्य महफ़िल के संस्थापक एडमिन दादा कैलाश जी सिंघल आपके साथ बिताए सुखद सात साल, एक साल शिव शक्ति समूह में, छह साल काव्य महफ़िल आपके भावपूर्ण संवाद, अपनापन, श्रध्देय दादा प्रेरणास्रोत बनकर हमेशा यादो में साथ रहेगें।

परमपिता मालिक से प्रार्थना है, अपने चरणों में स्थान दे।

रोटी

जीवन जीने के लिए
भूख की तृप्ति के लिए रोटी चाहिए।

रोटी वात्सल्य भरी
माँ के हाथ की रोटी
रोटी भावनाओं भरी
बहन के हाथ की रोटी
रोटी प्रेम भरी
पत्नी के हाथ की रोटी
तीनों में से जो भी मिले
मिल जाती है आत्मिक तृप्ति।
होटल की रोटी से
पेट तो भर जाता है
लेकिन
नहीं मिलती आत्मिक तृप्ति।
मालिक से प्रार्थना है
जिस खेत से
रोटी खाने को मिली है
उसमें काम करने वालों को भी सदा
मिलती रहे रोटी।

राष्ट्र के जवान

राष्ट्र के जवान
राष्ट्र की रक्षा के लिए
लगा कर मचान, खड़े हैं सीना तान।

न देखते ठंडए गरमी-बरसात
हर मौसम में
रहते हैं सावधान, खड़े हैं सीना तान।

मातृभूमि की कर
जीवन को धन्य करते
पाते हैं सम्मान, खड़े हैं सीना तान।

जब-जब दुश्मन ने आंख तरेरी
दिया माकूल जवाब
दांव पर लगा कर जान, खड़े हैं सीना तान।

इनके ही दम पर
राष्ट्र हमारा सुरक्षित
आता न व्यवधान, खड़े हैं सीना तान।

ख्याल

ख्याल आया कि
आपसे मुलाकात हो
दीदार हो आपका
जीवन में सार हो आपका
कुछ कह सकूं
दिल की बात
कुछ ले सकूं
आपकी रहमत
आपकी रुहानियत
ताकि
समझा सकूं
सबको इंसानियत
आखिर ये लम्हे
कैसे मिलेगें
कहा मिलेगें
मेरे सतगुरु
आंखे भर आई है
आपके दीदार के लिए।

अक्षय प्रेम

अक्षय प्रेम सबका
अक्षय रिश्ता सबसे
नियम यही बना है
सृष्टि बनी है जब से।

अक्षय सुख सबका
अक्षय धन धान्य हो
विनती यही विधाता
दर पर तेरे मान्य हो।

अक्षय संपदा सबकी
और निरोगी हो काया
देवों का वरदान बरसे
प्रसन्न रहे महामाया।

हे!मात् अन्नपूर्णा तेरे
भंडार ना खाली हो
अक्षय का न नाश हो
न कोई भी सवाली हो।

बहारों का मौसम

गर
रुक गयी
चलती दुनिया
पर
ना रूके हैं उजाले
ना रूके अंधेरे
नाहक चिंता घेरे।
रूठा है वक्त
कभी लगे नाजुक
कभी लगे सख्त
पर न रुठे
और न रुके
आत्मिक सुकून
रुठ कर
खुशियाँ कहां जायेगी
पतझड़ के बाद
हरियाली आयेगी
वक्त ये भी गुजर जायेगा
बहारों का मौसम फिर आयेगा।।

मेरे मालिक

तू
बेखबर नहीं है
मेरे मालिक
तुझे पता है कि
दुनिया में क्या हो रहा है
हर कोई परेशान हो रहा है
अब तो
हवाओ में भी जहर
कोई घोल रहा है
न जाने कब किसको
व्याधि घेर ले काल की
यह कैसी गति है
तू सब जानता है
तू काल का भी अधिपति है
हे! स्वामी
अब तो इन हवाओं का
रुख मोड़ दे
फिर एक बार खुशहाली से
हमारा संबंध जोड़ दे।

मेरे सद्गुरु

मेरे सद्गुरु के चेहरे की मुस्कान
सुबह-सुबह के सूर्योदय के समान।

मेरे सद्गुरु के चेहरे का तेज
सूरज के तेज से जैसे हो लबरेज़।

मेरे सद्गुरु के सानिध्य की शीतलता
ज्यों चांद से पाएं औषधियां और लता।

मेरे सद्गुरु की सब पर हो कृपा
ज्यों समन्दर की देखो क्षमता।

सब सदगुरु की कर लो सेवा
कटे चौरासी पावे मेवा।

मेरे सद्गुरु का ऐसा हो दीदार
हो भेदरहित सबका उद्धार।

गोपियां

देख गोपियों की टोली
कान्हा दौड़े पास,
प्रेम लुटाकर उन पर
रखे माखन की आस,

टोली में थी चतुर गोपियां
कहे बहुत चतुराई,
नाच दिखाओ पहले
फिर माखन कृष्ण कन्हाई,

बात मान कृष्ण कन्हैया
मंद-मंद मुस्कुराये,
नाच दिखाते जाते और
मुख भर-भर माखन खाये,

माखन खा मटकी फोड़ी
छुप गये कृष्ण कन्हाई,
चिढ़ी गोपियां टोली संग
मैया को बात बताई।

चंदन

चंदन लगाये
भगवान को
भक्ति भाव जगे हृदय में
महक जाये सुंगध से दोनों
मन और मंदिर।

चंदन लगाये
स्वयं के मस्तिष्क पर
खिल उठे मस्तिष्क
महक जाये तन और मन।

चंदन लगाये
बगीचे में महक उठे हवा चहुंओर।
चंदन लगाये
मृत शरीर पर
भाव जगते जीवन की नश्वरता के।

चंदन का स्वभाव एक
किंतु,
भाव जगाता अनेक।

सूरत

सूरत देखकर
सीरत का
अंदाज नहीं
लगाया जा सकता
जो दिल में
होता है
वह
चेहरे पर
लिखा नहीं होता
सूरतें अक्सर धोखा
दे जाती है
मुखड़ा लाख
छुपा हो
नकाब में
पर दिल से जाहिर
हर राज हो जाता है
सीरत देखकर
शख्सियत का
अंदाज हो जाता है।

हे! माँ तेरे लाख शुकराने

गर तू न होती तो कैसे जहां में आता
यह मोहक कायनात कैसे देख पाता

तेरा जिक्र आते ही आंखों में आंसू आ जाते हैं
बिना खुले ही मेरे लब तेरे ही गुण गाते हैं

तेरे हाथ के स्पर्श के लिए दिल पसीज जाता है
हर समय मेरा ये मन तेरा स्पर्श पाता है

चेहरा देखते ही समझ जाती थी तू हर बात
बिना मांगे बिना बोले सुन लेती थी दिल की आवाज

थोड़ी खुशी मिलती मुझे चेहरा तेरा चमक जाता था
आज ढेरो खुशियाँ है, तेरा चेहरा याद आता है

जिन्दगी के हर कदम पर तेरी कमी महसुस होती है
कभी तेरी हंसी कभी तेरी डाट सपनों में आती है

काश फिर बचपन लौट आए
मैं अपनी हर जिद में तुझे मांग लूं।।

नाम- डा० भारती वर्मा बौड़ाई
पता- 95, ब्लॉक- H, दिव्य विहार
डांडा धर्मपुर, डाकघर- नेहरूग्राम
देहरादून-248001 (उत्तराखंड)
मो. 9759252537
ईमेल- bharati.bourai007@gmail.com

श्रद्धांजलि

अपने, साथी और परिचित बिछुड़े
जिनका हमसे छूट गया है साथ,
उस पार की जगती में जा पहुँचे
ईश्वर अब थामना उनका हाथ।
विस्मृत न आप कभी होंगे मन से
हमारे हृदय में सदा करेंगे वास,
भाव पुष्प अंतर्मन के करती अर्पित
पहुँचेंगे आप तक ऐसा है विश्वास।

तू डर मत

तू डर मत
अपना नियत कर्म कर
आया है यह बुरा समय जो
अवश्य चला जाएगा

तू डर मत
डर से बाहर निकल कर देख
अंतर्मन की आँख खोल कर देख

तेरे साहस के आगे
पराजित होकर
यह यहाँ रुक नहीं पाएगा

तू सोच
कहाँ नहीं है तू!
तू देख
सृष्टि के कण-कण में तू!
दृष्टि घुमा कर देख जरा
हर जगह, हर शय में तू!

तो डर किस बता का है भला
समय बुरा सही
यह भी चला जाएगा

अच्छा समय मुस्कुराता हुआ
सबके पास फिर आएगा
रख विश्वास
यह समय बदल जाएगा

ये वक़्त

ये वक़्त सचमुच बड़ा सख़्त
पर नहीं है
किसी को भी कोसने का ये वक़्त
अपने/ परायों/ जाने/ अनजानों के
साथ खड़े होने का
उनके लिए कुछ करके
मृत्यु की ओर बढ़ते हुए
असंख्य जीवन बचाने का है
ये वक़्त
निस्वार्थ भाव से
मानवता का धर्म निभाने हेतु
साथ खड़े होने का है,
याद रखो
ईश्वर ने अपने इस काम के लिए तुम्हें चुना है,
उठो!
संघर्ष के साथी बनो
डरे हुओं का हौसला बनो
हारते हुओं की जीत बनो
ये वक़्त बस उम्मीदों पर खरा उतरने का है।

ज़िन्दगी

समय
कितना भी बुरा हो
ज़िन्दगी हाथ थाम ही लेती है
सुख-दुख
धूप-छाया की तरह हैं
बता कर छाया के हटते ही
धूप में भी चलना
सिखा ही देती है
उदासियों को
भेजती है नित्य
चिट्ठियाँ उम्मीद भरी
अन्ततः उन्हें हँसना
सिखा ही देती है
मृत्यु है शाश्वत
जैसी नियत की है
ईश्वर ने.....वह मिलेगी ही
पर रुकेगा नहीं संगीत जीवन का
इस सत्य से भी अवगत करा
इस संगीत में डूब जाना
सिखा ही देती है
ज़िन्दगी कभी माँ
तो कभी पिता बन कर
गिरने/ लड़खड़ाने/ ठोकर लगने पर
आगे बढ़ सम्भाल ही लेती है।

सन्नाटे गुनगुनाने को हैं

जो चले गए
उन्हें बुला नहीं सकते
जो जा रहे हैं अपने सारे प्रयासों के बाद भी
उन्हें जाने से रोक नहीं सकते
जो संघर्षरत हैं जीवन के लिए
उनके लिए प्रार्थना करें
शायद जीवन लौट आए
जो बच गए हैं
उन्हें स्नेह और प्रेम से सहेजे
इस तरह कि उनका खोया आत्मविश्वास
पहले की तरह खिलखिलाए
डर का दिखे न नामोनिशान कहीं
मन उनका संघर्ष पर विजय का गीत गाए
जो स्वस्थ हैं
जीवन की उष्मा से भरपूर हैं
वे जीवन की जीवंतता से सराबोर होकर
जीवन के गीत कुछ इस तरह गाएँ
कि टूट जाए सन्नाटा
मुखर हो जाएँ रौनकें
करें कॉल....पूछें हालचाल
और कहें
तमस घनेरा छँटने को है
सुखद सवेरा आने को है
निर्भय होकर देख जरा अब
सन्नाटे गुनगुनाने को हैं।

विरासत

विरासत में कुछ सौंपना
आने वाली पीढ़ी को
सबके वश में नहीं होता,
कभी सोचा है
स्वार्थ जब आपस में
बाँध तोड़ टकराते हैं
तो विरासत में कुछ सौंपने के स्वप्न
चकनाचूर हो जाते हैं,
विरासत में कुछ देने के लिए
मस्तिष्क भले ही छोटा हो
पर हृदय बड़ा होना चाहिए
जो छोटे-बड़े, अपने-पराये का
भेदभाव न करता हो,
योग्यता को वरीयता देता हो,
तभी विरासत सौंपी जा सकती है
आगे चल कर वही
भावी पीढ़ी में संस्कार जगा सकती है।

नाम- **अदिति रूसिया**
जन्म- 16/04/1972
शिक्षा- बी.ए.(पंडित रविशंकर यूनिवर्सिटी)
ईमेल- aditirusia@gmail.com
मो.- 9479043500

श्रद्धा सुमन

नमन उन्हें जो छोड़ गए,
अपनों को अकेला,
जाने कितनी सही होगी उन्होंने,
अकेले ही कितनी पीड़ा,
जब गए छोड़ वो परिवार,
कोई न था उनके साथ खड़ा,
एक आह भरी होगी उनने,
पर हमने न सुनी वो आह,
चले गए वो छोड़ हमें,
मिले श्री चरणों में उन्हें स्थान,
नमन उनको बारंबार!

उड़ने को

दिल करता है घर से बाहर हो आऊँ,
महीनों से घर में हूँ एक चक्कर काट आऊँ,
पर क्या करूँ निकली जो घर से तो पड़ेंगे डंडे,
काश पँख होते तो उड़ कर घूम आती,
स्वच्छंद आसमाँ में भर लेती मुट्ठी में सारा जहाँ
सोच अच्छी रख बढ़ा रही हूँ कुछ कदम,
थोड़ी सकारात्मकता लिए,
कर रही हूँ प्रयास उड़ने के,
सुना है आशा से आकाश थमा है,
घर की छत से ही देख लेती हूँ सारे जहाँ के नज़ारे,
कल्पनाओं में घूम आती हूँ,
चाँद तारों से कर बातें अपना मन बहला लेती हूँ,
सोच लेती हूँ कर लिया है मुट्ठी में सारा आकाश,
ख़ुशी से झूम जाती हूँ!
क़ितना अजीब है न ये माहौल,
हम करते थे कभी क़ैद पक्षियों को पिंजरे में,
काट रहे थे पर,
आज खुद क़ैद है ज़िंदगी घरों में,
नहीं है उड़ने को पर,
तड़प रहे जैन हम भी बिल्कुल वैसे ही,
जैसे तड़पते थे कभी पंछी,
खेलोगे किसी की की ज़िंदगी से,
पाओगे तुम भी वही, जो प्रकृति के साथ छेड़छाड़,
भोग रहे वही परिणाम,
उड़ने को आसमाँ है साफ़,
पर पर नहीं है उड़ने को साथ!

रुक जाना नहीं तू कहीं हार के

रुक जाना नहीं तू कहीं हार के,
आएँगे दिन फिर बहार के,
होगा सबका मिलना जुलना,
होगी फिर किट्टी पार्टी भी,
बैंड बाजे भी होंगे,
चढ़ेगा दूल्हा घोड़ी भी,
होगी होली ईद दिवाली,
धूम धाम से,
हर त्योहार मनाएँगे,
होगा शोर फिर एक बार,
न होगी सड़के सूनी,
न होगा बाज़ार सूना,
ख़रीदेंगे फिर साड़ी और सूट,
होगी ख़ूब शापिंग़,
जाएँगे पिकनिक मिलकर,
करेंगे ख़ूब धमाल,
सजेंगे चौपाल,
होगा जमघट पान ठेले पे,
मिलेंगे फिर यार दोस्त,
मचेगा धूम,

शांति है जो चारों ओर,
गूँजेगा फिर एक बार शोर,
बस थोड़ा सब्र रखो,
धैर्य से को काम,
उजड़ा उजड़ा सा जो लगता है,
अभी शहर और गाँव,
हिम्मत न हारे ग़र हर इंसान,
तो चमक उठेगा फिर सारा,
शहर और गाँव,
बस रुक जाना नहीं तू कहीं हार के,
बन के संबल,
खड़ा रहा तू ए इंसान!!

सफ़र जारी है सबका ....

ज़िंदगी थम सी गई है लेकिन,
सफ़र जारी है सबका,
पैसे वाले दे रहे हैं दान,
समझ रहे उसमें अपनी शान,
गरीब चटनी रोटी खा कर खुश है,
पिस रहे हैं तो मध्यम वर्गीय परिवार,
सफ़र जारी है सबका,
कोई अस्पताल में है,
कोई घर पर है आइसोलेट,
कोई ज़िंदगी की अंतिम साँसे ले रहा है,
कोई साँसों के लिए कर रहा संघर्ष,
सफ़र तब भी जारी है सबका,
ज़िंदगी और मौत की है जद्दोजहद,
घर पर रहकर कोई परिवार के साथ खुश है,
ये सोच की ईश्वर ने दिया है समय,
बिताने परिवार के साथ,
जाने कबसे न बैठे थे हम इन सबके साथ,
कहीं बन रहे रोज़ पकवान नए नए,
कहीं हो रही पार्टियाँ रोज़,
सफ़र जारी है सबका,

भले हो रही हो ख़ाली जेब,
पर खुश हैं सभी,
हर हाल में,
क्योंकि ज़िंदगी है प्यारी यारों,
सबको अपनी और अपनों की,
इसलिए तो घर पर रही,
सुरक्षित रहो,
मास्क लगाओ,
रखो दो गज की दूरी अपनों से,
अपनों की सुरक्षा है ज़रूरी,
हर हाल में खुश रहो,
सफ़र बाक़ी है दोस्तों,
करना है अभी ख्वाहिशें पूरी,
छूना है आसमाँ,
सफ़र तब भी जारी था,
सफ़र अब भी जारी है,
अभी हौसलों की उड़ान है अधूरी!

नाम- **मोनिका रुसिया**
पता- 55/2 नेहरू नगर (पश्चिम) भिलाई,
छत्तीसगढ़, पिन- 490020

श्रद्धांजलि

ऐ दूसरी दुनिया के मुसाफिर,
तुम वापस कब आओगे फिर?

तुम बिन सब कुछ लगता है सूना
नहीं भाता है खाना, पीना और सोना।

ईश्वर से विनम्र विनती और है नमन,
तुझे अपनी चौखट पर दे शरण।

यहां सी दुनिया वहां भी आबाद करना,
ए दूसरी दुनिया के मुसाफिर, खुश रहना।

रोशनी की लकीर

चाहे कितना भी अंधेरा हो,
ना डरना बंदे।
रख विश्वास मालिक पर,
काट देंगे अंधेरे फंदे।

समझ ना आए जब,
दिखे ना कोई पथ तब।
शरण में जा पुकार रब,
करेगा वो ऐसे करतब,
मिट जाएंगे दुख सब।

तू मत हो उदास,
कर अरदास,
बुला अपने पास
पूरी करेगा आस।

अंधेरे को चीर,
आएगी रोशनी की लकीर।
तू राजा हो या फकीर,
तेरी हर लेगा वो पीर,
है वो बेनजीर।

बिन बाधा के कैसा जीना

बिन बाधा के कैसा जीना
कभी है हंसना
कभी है रोना
बिन बाधा....।

बाधायें देती हैं हिम्मत
लड़ने और संभलने की
राही चला चल अकेला
'गरल' पड़ता है पीना
बिन बाधा के....।

हे राधारमण, बाधा हरण
पड़ूँ चरण, आया शरण
नहीं कहता टारो बाधा
पर देना यह ताकत आ जाये सहना
बिन बाधा के....।

अपनों की पहचान कराती बाधा
परायों को अपना बनाती बाधा
हे गोविंद मुरारी सुनो विनती हमारी
कोई ऐसी बाधा ना आये
कोई अपना पराया ना बन जाये
बिन अपनों के कैसा जीना
बिन बाधा के...।

पंख

आप लोगों ने इतना मजबूत बनाया,
सद्‌गुणों से पोषी काया।

योग्यताओं के पंख उगाये,
विस्तृत नभ के दीदार करवाये।

आज मैं सक्षम हो गई हूँ,
माई, बाबू, देखो! मैं उड़ चली हूँ।

मेरे पंखों ने भरी उड़ान,
बाहें फैलाये खड़ा आसमान।

आज मैं संघर्षों से नहीं डरती,
सफलता मेरे कदम है चूमती।

जैसे सूरज की लाली बढ़ती जायेगी,
मेरी आभा भी द्‌विगुणित होती जायेगी

आप लोगों का आशीर्वाद,
सफलता दिलाएगा निर्विवाद।

उल्लास

गुब्बारे बेचता बच्चा, खड़ा था उदास,
आज एक भी पैसे नहीं है पास।
माँ भी बीमार है पड़ी,
सहसा मेरे ऊपर उसकी नजर पड़ी।
आई आंखों में चमक,
मेरी तरफ आया लपक।
ले लो साहब बड़ी आशा से बोला,
देख उसे मेरा मन भी डोला।
मैंने उसके सारे गुब्बारे लेकर,
उसके हाथ में पैसे देकर,
कहा--क्या दोस्त बनेगा मेरा ?
जन्मदिन है आज मेरा।
आँखें और होंठ एक साथ मुस्कुराये,
खुशी छलकाते हुए उसने हाथ बढ़ाये।
हाथ पकड़ हम चले हलवाई दुकान,
बंधवाये तरह-तरह के पकवान।
गुब्बारे, पकवान देकर किया उसे विदा,
उसके चेहरे के उल्लास, मैं हो गया फिदा।
झूठा जन्मदिन भी ले आया, हर्ष उल्लास,
सच कहूं, दिल में फैल गया उजास।

जीना इसी का नाम है

क्या,
बोलूं,
तुमसे,
क्यों उदास,
गुमसुम हो।
जीवन के इस
रंगहीन पक्ष को,
रंगों में ढालना सीखो।
कभी खुशी कभी गम है,
क्योंकि, जीना इसी का नाम है।
खुशियां, बिखरी हैं बंधु,
समेट, फिर बिखेर,
रौनक, उकेर तू।
इंद्रधनुष सी,
जिंदगी सखा,
उठ कर,
फिर से जी।

नाम- **प्रदीप कुमार अरोरा**
पता- एमआईजी-54, 'आनंदमठ'
हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी (प्रथम)
झाबुआ (मध्यप्रदेश)
पिनकोड - 457661
वाट्सप- 9425192297, चर्चा- 8889055581
ईमेल- Arora.pku@gmail.com
संप्रति- अधिकारी, मध्यप्रदेश ग्रामीण बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, झाबुआ (म.प्र.)

उज्ज्वल सदियाँ भी हैं

हमारे काफिले में.. खुशी की डोलियाँ भी हैं,
वजन ढोते कहारों की अठखेलियाँ भी हैं।

है पहाड़ों-सी चढ़ाई तो कुछ समतल भी है जमीं,
कुछ सुरंगे हैं जिंदगी में, कुछ तंग गलियाँ भी हैं।

है साहस अगर तुझमें.. औ' फड़कती हैं भुजाएँ,
धारा के विपरीत मचल यहाँ सजल नदियाँ भी हैं।

हैं चुभन यदि राह में तो उपवन भी यहीं होगा,
खिल के बिंधने को तैयार.. गुलाबी कलियाँ भी हैं।

अपनी गुलामी के पाठ काले चाहे पढ़े हों तूने,
'प्रदीप' देखना देश की.. अब उज्ज्वल सदियाँ भी हैं।

उत्साह की अपील

घड़ी की गतिमान सुइयों के साथ
टिक-टिक सा स्वर
अहसास दिलाता है बीते पलों का,
पल-पल के साथ
दिन गुजर जाता है
हर सांझ ढलने पर मिलता है
"विश्रांति का सन्देश",

यह विश्रांति
यदि शिथिलता में हो जाए तब्दील
कर्मयोग रह जाएगा अधूरा,

विश्रांति तो
आत्मविश्लेषण का है पड़ाव
जहाँ पहुँचकर हमें देखना है
उद्देश्य की शेष परिलब्धियाँ
आने वाले दिवस हेतु
कितने उत्साह की करती है अपील,

यदि
सार्थक रूप में हम सुन पाए
घड़ी की टिक-टिक
और
कैलेंडर के बदलते पन्नों की फडफडाहट
तब ही 'प्रदीप'
सुबह की पहली किरण
दोहरा उत्साह लिए करेगी स्वागत "कर्मयोगी" का।

बस चला चल

"बस चला चल, चला चल,
गर' आज को स्वीकार लिया,
स्वागत फिर करेगा कल।

बीते का न अफ़सोस हो
इस दौर का न रोष हो,
हैं मंजिलें भी मुकम्मल
प्रयास जो हो सफल। बस चला चल ...।।

संस्कार की जो भोर थी
वो बात ही कुछ और थी
अब विषमताओं की बात है
ग्रहणयुक्त पूनम की रात है
ये रात भी ढल जायेगी
होगी नई भोर कल। बस चला चल चला चल ...।।

चहुँ और कल थे सुमन खिले
आज राहों में काटे मिले,
ये चाल बदल जायेगी
नजाकत फिर से छाएगी,
बस देखकर औरों को तू
थोड़ा सा जाना संभल। बस चला चला चल..।।

अभिमान जताइए हुजूर

जंगल में भी मंगल मनाइये हुजूर,
सन्नाटे से रिश्ता अपनाइये हुजूर।

हैं नादान जो काट ले खुद की डाली,
ऐसे कालिदास को आजमाइये हुजूर।

कागज के फूल से भी मुस्कराते हैं चेहरे,
उनकी छद्म महक पर न जाइये हुजूर।

आदम की याद फिर आने न लग जाए,
तंग-उघड़े लिबास न सिलवाइये हुजूर।

मछलियों को पत्थरों से है न कोई खौफ़,
कुटिल जाल अपना न बिछाइये हुजूर।

वैसे भी सदियों से ग्राम प्रधान है बदनाम,
अब आए हैं रहनुमा खौफ न खाइये हुजूर।

दाग अपने चेहरे का छुपाने की खातिर,
दूसरों के काले टीके न गिनाइये हुजूर।

तिजोरियों की पहरेदारी कर ली है बहुत,
देश के पहरेदारों पर कुछ लुटाइये हुजूर।

विकास गति को विश्व ने एकस्वर सराहा,
देश पर अभिमान जरा जताइये हुजूर।

अंधेरों पर अब भी अगाध श्रद्धा क्यों है,
अपने मन की रोशनी जगमगाये हुजूर।

अंतिम हार हो जाए

चलो अपनों के खातिर ही कोई विचार हो जाए,
सुदामा घर पर आये तो, किशन-दरबार हो जाए।

न नदिया हो, न झरने हो, मेरे आंगन में दोस्तों,
निर्झर-सी स्नेह की फिर, वहीं रसधार हो जाए।

ये हवाएँ ये फिजाएँ, आ जाएँ महक लेकर,
गर' बे-मौसम मने उत्सव, तो बहार हो जाए।

न मैंने कुछ लुटाया है, न खैरात कभी बाटी,
मजाल है फिर भी कोई, यहाँ लाचार हो जाए।

न मायूस रहे कोई, न माने खुद को बेगाना,
यहाँ दिल की दौलत से ही, नवसंचार हो जाए।

मुफ़लिसी 'प्रदीप' तेरी, रखेगी याद ये दुनिया,
गर' तेरी हार में जीत है तो, अंतिम हार हो जाए।

भला तेरा क्या जाएगा

"दिया है जख्म जिसने, वही मरहम भी लाएगा,
दुविधा में जिसने छोड़ा है, वही राह दिखायेगा।

नहीं परेशान होना तू, ना मायूस हो जाना,
ये वक्त का दरिया है, बहते-बहते बह जायेगा।

न चांद की कर ख्वाहिश,न तारे तोड कर लाना,
जिसे कोई स्वार्थ न होगा, गले तुझको लगाएगा।

जीवन राह नहीं आसान, अरे तू ही सरल बन जा,
हुआ गर' तू कठिन, तो हल फिर कहां से पाएगा।

माना ये सरल बातें किसी को रास ही न आये,
'प्रदीप' खुद ही बतियाले, भला तेरा क्या जाएगा।

नाम- **ऋतु कोचर**
शिक्षा- बी.ए.
पता- तहसील-कटंगी, जिला-बालाघाट,
मध्यप्रदेश, पिन-481445
मो. - 8770573730

सकारात्मकता

आओ फैलाएं सकारात्मकता का उजाला
ताकि मिट जाए द्वेष का काजल काला,
भरा पड़ा जो मन में विष का है प्याला,
उजला हो जो उर तो त्योहार हो जाए आला,
हर चार दीवारी खुशियों से हो प्रकाशमान,
अब की बार चलो रखले सबका ध्यान,
खुल कर दिल की बात करें रखें न अभिमान,
बड़े बुजुर्गों को भी मिले उनका उचित सम्मान,
अपनेपन की रौशनी से हर दिल हो सराबोर,
कटुक भावना का अब चले न कोई जोर,
वैचारिक मतभेद का तनिक भी न हो शोर,
उल्लास और उमंग से मन हो भावविभोर,
माना बहुत इंतज़ार के बाद आते हैं त्योहार,
सजग रहकर सुरक्षित भी सबको रहना इसबार,
माना कि रास्ते सुने और सुने हैं बाजार,
चाहे दूरी है सही मन में सद्भाव के हो अंबार।

फिर सुकून का दौर हो

झूठ पर सच की जीत कैसे होती है
निराशा आशा को हमेशा संजोती है
पाप पर पुण्य सदा विजयी होता है
पाता वही है मानव जो वो बोता है,
अन्धकार के बाद प्रकाश होगा जरूर है
धैर्य रखो अहंकार होता जरूर चूर है,
इन्हीं सब सकारात्मकता का त्यौहार
होली आती है वर्ष में सिर्फ एक बार,
हर बुराई को दिल से मिटाते चलो
फिर खुशियों के रंग भी लगाते चलो,
बैर विरोध को जब दिल से मिटा देंगे हम
तब समझेंगे होली मना लेंगे हम,
एक विश्वास है कि बुराई पर अच्छाई की
जीत होगी विपदा से सेवा और भलाई की,
रंगो की इस दुनिया में फिर सुकून का दौर हो
फिर से सुख की नींद और फिर शांति की भोर हो।

फरियाद

हर एक नई भोर अपने व्यक्तित्व का राज़ बताती है
हर काली रात के बाद एक उजियारी सुबह आती है,
होगा ये मौत का तांडव भी एक दिन ख़त्म होगा
हर सुबह के साथ सकारात्मकता का जन्म होगा,
हर काली रात का अंत निश्चित है
हां अब एक सुकून भरे सवेरे का इंतजार है,
एक दिन फिर दूसरा फिर तीसरा
ना जाने कितने दिन बीतते जा रहे है
समय है कि नित नई यातनाएं दे रहा है,
पर उम्मीद तो बनाए रखना ही है
विश्वास का दीप तो जलाए रखना ही है,
अपनो का मजबूत संबल बनना है
जितना हो सके मदद के लिए आगे बढ़ना है,
हिम्मत करने वालों की हार नहीं होती
यूं ही नहीं बनता कोई सीप से मोती,
माना कि अपनों के खोने से मन है आहत
पर चाहे जो हो छोड़ना नहीं जीतने की चाहत,
जो नहीं है उन्हें दुआओं में याद रखना
जो है उनके स्वस्थ रहने की फरियाद रखना।

रुक जाना नहीं, तू कभी हार

रुक जाना नहीं, तू कभी हार
एक बार फिर निकलेंगे घर से
एक बार फिर निकलेंगे अपने डर से
फिर से एक बार आएंगे दिन बहार के
रुक जाना नहीं तू कभी हार के.....
फिर एक बार खुशनुमा समां होगा
सुख दुख में साथ फिर से सारा जहां होगा
मौके मिलेंगे सबको भावना के इज़हार के
रुक जाना नहीं, तू कभी हार के.....
चार दिवारी में रहने को न मजबूर होंगे
अपने अपनों से फिर न कभी दूर होंगे,
आएंगे दिन वही पुराने ऐतबार के
रुक जाना नहीं, तू कभी हार के,
उत्सव फिर से मनाएंगे
मस्ती के वो दिन फिर से आएंगे
गले मिल पाएंगे अपने यार के
रुक जाना नहीं, तु कभी हार के,
बस अंतर में विश्वास बनाए रखना
उम्मीदों के दिए बुझे नहीं,जलाए रखना
रुख मोड़ना है हमें इस जहरीली बयार के
रुक जाना नहीं, तू कभी हार के.....

अब अंतर में आना होगा

खूब भटक लिए बाहर बाहर
अब अंतर में आना होगा,
पहचानो आत्मा की शक्ति
आंतरिक बल को जगाना होगा,
अथाह सामर्थ्य है अपने भीतर
आज जान लें फुर्सत में,
हार रहा जब दुनिया से इंसा
यही काम आए जरूरत में,
ये शत्रु है भले बाहर का
निज अंतर से वो हारेगा,
हिम्मत ही रक्षा कर सकती
डर तेरा तुझको ही मारेगा,
भय जहां तहां पसरा है माना
ज्यादा खबरों से दूर रहें,
योग, कसरत, घर की औषधि
और स्फूर्ति से भरपूर रहें,
वक्त बुरा है, मगर वक्त है
एक दिन जरूर बीतेगा,
जिसने अंतर को मजबूत बनाया
वो इस विश्वयुद्ध से जीतेगा।

अनुमान

आज ये हवाएं कुछ अलग ही बह रही है
सबके अपने अंदाजे और अनुमान कह रही है,
किसी ने कहा कि बीमारी खांसने छीकने से होती है
कोई कहता है मास्क लगाने से इसकी शक्ति हवा होती है,
लोगों का अंदाज है कि घर में रहना सुरक्षा है
कुछ का अनुमान है कि वैक्सीन ही इससे रक्षा है,
हाथ धोना और दूरी रखना भी एक उपाय है
जितने दिमाग है उतनी ही अनगिनत राय है,
समाचार, और अफवाहों से लगता डर है
बाहर निकलना खतरा सबसे अच्छा घर है,
चाहे कोई कुछ भी कहे संकल्प शक्ति से ही हल है
धीरज और नैतिक सहारे से ही मिलता बल है,
एक दौर है ये भी कुछ समय में गुजर जाएगा,
आपदा बीत जाएगी फिर से अच्छा समय आएगा।

नाम- **अंजू भूटानी**
पता- F 02, कलिंगा बिल्डिंग,
शिवाजी काम्प्लेक्स, मानकापुर, नागपुर
ईमेल- umadanj@gmail.com
मो.- 8600109262

श्रद्धा सुमन

चिर निद्रा में लीन
सो गये तुम तल्लीन

कुछ नहीं अब शेष
यादों के बस अवशेष

चिर रहने को कौन आता
जिस तरह गये कौन जाता

गुलशन में फूल बिखर गये
मौसम पतझड़ के आ गये

अंतहीन यात्रा पर निकल गये
यादों की खुशबू छोड़ गये

कुछ सुमन चुनकर लायी हूँ
दीया देहरी पर लगायी हूँ

अंजुरी भर जल है तर्पण
अश्रु की माला है अर्पण

पीड़ा

कलम, कागज़, हर्फ़
लेकर मैं पिरोती
शब्दो को उकेरती
पीड़ा बन गीत बहती

गगन में उड़ने की चाहत
स्वत्रंत विचरने की चाहत
पर अपनो से हारी
बनी कठपुतली नारी

दर्द के मेघ गरजे
पीड़ा के स्वर उभरे
मन की वेदना बहती
ग़ज़ल की बहर बनती

वृद्धा आश्रम में कृश काया
ढूंढती आँखे अपना जाया
कहानी-किस्से हुए खत्म
दादा-दादी हुए अदृश्य

एकाकी बचपन लरजता
प्यार पाने को तरसता
हृदय उदधि में घुमड़ती
पद्य बन पीड़ा उमड़ती

सीखा देती तीव्र पीड़ा
संदेश देती अंतस ज्वाला
हिम्मत से हैं हारना
हिम्मत नही हैं हारना

आशा

थोड़ा-थोड़ा इश्क ज़िंदगी से कर
थोड़ी-थोड़ी मशक्कत ज़रूर कर

निराशा की बदली छायी हैं
आशा की मौज बहती आई है

यह गलती कर तू दोबारा
आस के दीप जला तू दोबारा

चराग़ रोशनी के जलने दे
आज दीया तले उजाला होने दे

मायूसियों को दे तिलांजलि
मन के सूर्य को दे अंजलि

तम को ज़रा जलने दे अभी
मरुस्थल में भी मिलता जल कभी

स्याह रात के घोर अंधेरे हैं
फलक पे चमकते हैं जुगनू उम्मीदों के

चली हैं आँधियाँ विनाश की
प्रज्वलित कर लौ आसरे की

जो जाम आँसू के पीते है
वो अक्सर साहिल को पा जाते है।

औरत-त्याग की मूर्ति

विकल वेदना की प्रतिमूर्ति तुम नारी
सुलगती, दहकती सीने में चिंगारी

गांधारी बन त्यागती तुम नयन ज्योति
विरहिणी राधा बन रह जाती प्यासी

बार बार होती अग्निपरीक्षा तुम्हारी
मिट मिट कर निज को सदा सँवारती

कभी बन जाती लक्ष्मण की उर्मिला
अनवरत चलता दुःख का सिलसिला

सिद्धार्थ त्याग तुम्हे पा गये निर्वाण
तुम चलती रही पथ अंगार

तुम हो अपार जैसी धरती
तूफान झंझावात तुम सहती

सहेजती उर पन्ना धाय सम ममत्व
माँगती नही प्रतिदान में अपनत्व

तुम्हारी वेदनाएँ सिमट जाती वर्णमाला में
फिर भी गूंथ लेती खुशियों की माला

स्नेह-करुणा-प्रेम की हो तुम मूरत
तुम में बसती ही ईश की मूरत

करुणा (हायकू कविता)

करुणा दान
करो ईश महान
बंदगी करू

दया निधान
बक्शो प्राण
रहम करो

हरो संताप
बरसे तेरी कृपा
रहमत हो

करो निदान
दे दो निर्मल वायु
करो उत्थान

जले अंतस
दीपक करुणा का
सुख सर्वत्र

हे कमलाकांत
सकल दुख हरो
दया दान दो

जीवन चक्र

अनवरत संघर्ष है जीवन
बाधाओं के पर्वत सुमेरू
कुछ तो बात है जीवन संघर्ष में
प्रेरित करता है जूझने को

कंटीली है राहे जीवन की
मार्ग दुर्गम जीवन पथ के
कुछ तो बात है काटों में
उलझते है अतलसी जीवन-वस्त्र

पतझड़ आते जाते है
गिरती पत्तियां पुरानी
कुछ तो बात है जीवन ऋतु में
करते संचार बसंत नव जीवन का

मृत्यु तो है अटल
सत्य यही जीवन का
कुछ तो बात है जीवन चक्र में
तीव्र उत्कंठा है जीने की,..!

नाम- **श्रीमति अनुजा दुबे** (शिक्षिका)
पति- श्री सुनीत कुमार दुबे
पता - USA Vidya Niketan
Shree Ram Bhawan Campus,
Tumsar, Dist. Bhandara,
P0 Tumsar, Pin- 441912 (MH)
मो.- 7498368581

श्रद्धांजलि

रोये किसके लिए बोलो, किसका मातम मनाए हम,
चले गए छोड़कर हमको,जिंदगी भर का दे के ग़म,
मन की श्रद्धा के भावों के समर्पित फूल करती हूँ,
सजल नैनो से, भावों से नमन उनको मै करती हूँ।।

अब न वापस वो आएगा,गया मुँह मोड़ कर ऐसे,
अब न संभलेंगे वो रिश्ते, गया कुछ तोड़कर ऐसे,
कहानी तो ख़त्म हो गई, सदा आती रहेगी बस,
सोचते ही रहेंगे हम, याद के साये में बरबस।।

हृदय की पीर न हो कम, न आँसू 'पूजा' के थमते,
न चेहरा भूलती आँखे, न मेरे होंठ कुछ कहते,
मौत ने तेरी न जाने, कैसी हलचल मचाई है,
नही होता यकीं फिर भी, यही दिल की सच्चाई है।

जिंदगी के पल

जिंदगी में जो पल मिले, उनको सवांरा कीजिये,
ढूँढ़ कर उनमें ख़ुशी, उनका नज़ारा कीजिये।

आया है जो वक़्त ये भी, जाएगा इक दिन मगर,
शोक में जाया न कर, हिम्मत से काम लीजिये।

अशफ़ाक से कोई कम नही, है साया वाल्दैन का
साथ उनके बैठ पल दो पल ख़ुशी के दीजिए।

खा लो क़सम कि अब न, छेड़ेंगे फिज़ाओं को जरा,
दोस्त बनकर दोस्ती का हाथ आगे कीजिये।

होती नही आसां मोहब्बत, औरों से पाना कभी,
पाना है तो सब्र के, इम्तहान लाखों दीजिए।

करना है महसूस गर, रब की मेहर 'पूजा' तुम्हे,
दूसरों के दुख को भी शामिल दुआ में कीजिये।

मुश्किलों को हराते हैं

चलो आज फिर मुश्किलो को हराते हैं
आँखों में फिर नए से, सपने सजाते हैं।

बीतेंगे ये दिन भी, जैसे सब बीते हैं
मत हो उदास, चलो मुस्कुराते हैं

कट जाएंगी ये गुमसुम-सी राते,
मिलकर एक खुशियों भरा गीत गाते हैं।

बैठो न यूँ तनहा तनहा अलग से,
रूठो ज़रा तुम, हम तुमको मनाते हैं।

न होंगे जुदा मुश्किलों में कभी हम
ले हाथो में हाथ ये वादा निभाते हैं।

न शिकवा करो न करें हम शिकायत
ग़मो का वो आलम चलो भूल जाते हैं।

मिटेंगे अंधेरे और खिलेगा शबाब
दिलो में इश्क की एक शम्मा जलाते हैं।

चलो आज को ख़ास फिर हम बनाते हैं
कुछ तुम बढ़ो, कुछ क़दम हम बढ़ाते है

चलो आज फिर मुश्किलों को हराते हैं
आँखों में 'पूजा' नए सपने सजाते हैं।

ज़िन्दगी और रिश्ते

रिश्तों से ही सदा ये, रोशन है जिंदगी,
वरना ये इक वीरान ज़मी सी है जिंदगी।।

ज़रूरी नही हर रिश्ते का कोई नाम हो यहाँ,
बेनाम रिश्तों से भी है रंगीन ज़िन्दगी।

लगते हैं जिनको रिश्ते कभी बोझ के जैसे,
काटे नही कटती है उनसे ये जिंदगी।

रिश्तों को कभी पैसो से तोला नही करते,
पैसे की नही होती है बुनियाद जिंदगी।

रिश्ते जो दिल से बनते हैं दिमाग से नही,
ऐसे ही लोगों से सदा सजती है जिंदगी।

हर हाल में जो रिश्ता निभाते चले गए,
ऐसे ही लोगों पे फ़ना होती है जिंदगी।

रिश्ते ही हैं कि जिनसे चलती है जिंदगी,
हँसती है जिंदगी कभी रोती है जिंदगी।

संबंधों को जो अहमियत देते रहें सदा,
उनके लिए होती है ख़ुशगंवार जिंदगी।

दिल से दिलो तक 'पूजा' होते जहां रिश्ते,
होती वहां ख़ुदा की अशफ़ाक जिंदगी।।

असर

दुआओं में जो शामिल करोगे सभी को,
तो अपने पे रब की मेहर देखियेगा।

न करो छेड़खानी फिज़ाओं से तुम यूँ,
इक न इक दिन फिर कहर देखियेगा।

भुला दोगे ग़म को इसी रात मे जो,
फिर ख़ुशनुमा ज़िन्दगी का सहर देखियेगा।

जरूरी है दूरी दुश्मनों से बनाना,
वरना फिर उनका ज़हर देखियेगा।

सुकूँ देते हैं वालदीन-ए-साया,
फुर्सत से बैठ इक पहर देखियेगा।

रोते हुए को हँसा दो अगर तुम,
तो उसकी ख़ुशी का असर देखियेगा।

गर थमी न मज़हबी कौम की ये लड़ाई,
तो सुनसान वीरां शहर देखियेगा।

गर समझना है 'पूजा'जो उसकी मोहब्बत,
तो सिर्फ औ सिर्फ उसकी नज़र देखियेगा।

आओ इक दीपक जलाये

खोया बहुत सबने कोरोना जंग में,
फिर भी न टूटे, हम लड़ सब संग में
मिल के एक दूजे को फिर ढाढ़स बधाऐं,
आओ आशाओं का इक दीपक जलाऐं।।

देखो शहर कैसा हुआ सुनसान है,
अपने ही घर कैद खुद इंसान है,
जीतेंगे जंग उम्मीद ये खुद में जगाए,
आओ दुआओं का भी एक दीपक जलाएं।।

घुल गया कैसा हवाओं में जहर,
मच गया कोहराम, ये कैसा कहर?
मुश्किलों के इन पलों को यूँ बिताए,
आओ मिल इक प्रीत का दीपक जलाएं।।

दिन के उजालों में भी छाया सा अंधेरा है,
आता नही फिर रोज़ पहले सा सवेरा है,
मुश्किलों के इन पलों को यूँ बिताएं,
हौसले का आओ एक दीपक जलाएं।।

लड़ रहें जो जंग रहकर घर से बाहर,
दांव पर जीवन को अपने यूँ लगाकर,
मिलकर उनका हौसला कुछ यूँ बढ़ाऐं,
इक दिया उनको समर्पित कर जलाऐं।।

मिट रही है रोज कितनी जिंदगानी,
मिट रही है रोज अपनो की निशानी,
देके 'पूजा' सांत्वना उन बेबसों को
शांति का एक दीपक फिर जलाएं।।

नाम- **डॉ मीनाक्षी सुकुमारन**
पता- ए -1401 एक्सोटिका फ्रेस्को
सेक्टर 137 नोएडा (यू.पी)
पिन- 201305
मो.- 9810862418

श्रद्धा सुमन

यूँ तो कोरोना का कहर मार्च 2020 से भी हम सभी के जीवन पर हावी है पर तब सारा वक्त लॉकडाउन में बिता इसलिए ज़्यादा आभास नहीं हुआ।पर 2021 चंद महीनों में ही इतनी तेज़ी से बढ़ते मौत के आंकड़े, हर तरफ दर्द, लाचारी देख जहाँ मन दहल उठा वहीं फेसबुक और व्हाट्सएप पर रोज़ ही किसी न किसी के बिछड़ने की खबर ने गहरी मानसिक चोट दी है। हँसते खेलते जीवंत लोगों को कोरोना महामारी से यूँ हम से बिछड़ जाना बेहद ही दुखदायी रहा। उन सभी को भावपूर्ण श्रद्धा सुमन।

बहते आँसू बिकती साँसे

लगा है देखो बाज़ार ये कैसा
जहां दवा, इंजेक्शन से लेकर बिक रहा खून और साँसे भी
जितनी ऊँची बोली उतनी जल्दी सुलभ
यूँ खुले आम हो रहा व्यापार बहते आसूँओं का
दाव पर लगी ज़िन्दगीयों का
जो तड़प रही बिकती सांसों के लिए
लगा है देखो ये बाज़ार कैसा
जहां रही न कीमत कोई जज़्बातों की,
भावनाओं की, न ही इंसानियत की
बस बन गया काला व्यापार ये
सिक्के बटोरने का मजबूर
इंसानों से जो हर हाल में चाहते
बस अपनों को बचाना
तभी तो ऊँचे से ऊँचे दामों में बेच रहे
इंजेक्शन और ऑक्सिजन
महामारी ने कर दिया वैसे ही बेहाल न मिले हस्पताल,
न इलाज ऊपर से मोल तोल
इन काला व्यापारियों का
जिन्होंने ज़िन्दगी और साँसों
को तो किया ही शर्मसार डुबो लाचारी और आँसूओं में
मौत की खुल कर लगाई बोली
मनचाहा मांग रहे पैसा अंतिम क्रिया का भी
लगा है देखो ये बाज़ार कैसा...

साथी हाथ बटाना

है गहरा अंधियारा
आता कुछ नज़र नहीं
सिर्फ खौफ़ के
साथी हाथ बटाना
थामने को उम्मीद का सिरा।।
न कोई अपना न कोई पराया
इस महामारी में
सिर्फ दुःख, तकलीफ, अकेलापन है हावी
साथी हाथ बटाना
थामने को उम्मीद का सिरा।।
जहां तक नज़र जाए सिर्फ लाचारी
मौत ने किया तांडव ऐसा
कांप उठी रूह
साथी हाथ बटाना
थामने को उम्मीद का सिरा।।
जितनी मजबूर ज़िन्दगी उतनी ही लाचार मौत
न मिल रहा उपचार बचाने को जान
न मिल रही मुक्ति ठीक से अंतिम क्रिया की
साथी हाथ बटाना
थामने को उम्मीद का सिरा।।
बेबस साँसे
बेबस लाशें
किस से कोई क्या कहे
बस सिसकता डरता है दिल हर पहर घिरा बेबसी में
साथी हाथ बटाना
थामने को उम्मीद का सिरा।।

तमस घनेरा छट जायेगा

क्या सच में वो दिन आएगा
जब काला दुखों का गहरा अन्धियारा छट जायेगा?
क्या सच में वो दिन आएगा
जब ज़िन्दगी बेहताशा पड़ी
कराह रही नहीं होगी साँसों को?
क्या सच में वो दिन आएगा
जब कोई मौत न होगी बिना इलाज के?
क्या सच में वो दिन आएगा
जब हस्पतालों के चक्कर लगाते हुए कोई बेबस मरेगा नहीं?
क्या सच में ऐसा कोई घर न होगा जहाँ मौत का
डेरा न हो?
क्या सच में वो दिन आएगा जब श्मशानों में कतारें
नहीं होंगी?
क्या सच में तमस घनेरा छट जायेगा
और ज़िन्दगी फिर मुस्कुराएगी
न कोई डर, न कोई अभाव
न कोई दुःख, न कोई बिछड़न
बस सुख, शांति, अपनापन और प्यार बेखौफ
क्या सच में तमस घनेरा छट जायेगा और खुशियों का
सुनहरा सूरज उग आएगा हटा दर्द के साये सारे।।

प्रेम के कई चेहरे हैं

हर तरफ जब छाया है
मातम का घोर अन्धियारा
दहला है दिल
कांप उठी है आत्मा
मजबूर हुआ जीवन यूँ
मौत के हाथों
बिछड़ रहे अपनों से अपने जहां
बिना इलाज, दवा, इंजेक्शन, ऑक्सीजन
जमकर हो रही कालाबाज़ारी
औए वहीं श्मशानों में भी हो रही खुल कर दलाली,
मनमानी
ऐसे में दर्द के निराशा के चेहरे कई
वहीं मसीहा बने प्रेम के कई चेहरे भी हैं कई
जो दे रहे मुफ़्त खाना, दवाएं, ऑक्सिजन और संभव इलाज
एक तरफ शर्मसार करते चहरे हैं
तो वहीं प्रेम से सराबोर कई चेहरे हैं
जो दिन रात कर रहे निस्वार्थ भाव से सेवा
जैसे जिस से हो सके
जहां फेर रहा कोई मुँह
वहीं हाथ बड़ा कर दे रहा सहारा कोई
प्रेम रूपी मानवता का न
होता कोई रूप या रंग या चेहरा दिखा रहा है वो ये
दुःख भरा वक्त
जहां हर कोई मोड़ रहा मुंह
संबल बने खड़े हैं ये मसीहा बने प्रेम के कई चेहरे।।

बेबसी

हर तरफ बेबसी
हर तरफ लाचारी
हर तरफ रुदन
हर तरफ मातम
हर तरफ सांसों को
तरसती ज़िन्दगी
तो कहीं कतारों में
जलती लाशों का अंबार
कौन सी दुनिया है
जहां दर्द हो गया हावी
इतना जीवन पर
की टूट चुके हैं तन और मन
बस बिखरना बाकी है
नहीं काम कर रही कोई प्रार्थना न दुआ
रोज़ बिछड़ रहे अपनों से अपने
पूरा का पूरा सिस्टम चला गया है वेंटिलेटर पर
चलाता दौर बस गुटबाज़ीयों, बयानबाज़ीयों, दोषारोपण का
और मासूम मारे मारे रहे कराहते कहीं दवा, कहीं इलाज,
कहीं इंजेक्शन तो कहीं ऑक्सिजन के लिये
ज़िन्दगी तो ज़िन्दगी
मौत भी खड़ी है कतार में मुक्ति के लिए
घंटो का इंतज़ार, लंबी कतारें
वहां भी चल रहा कहीं टोकन सिस्टम तो कहीं सौदेबाज़ी
जितनी बेबस ज़िन्दगी उतनी ही मौत
देख देख, सुन सुन ये सब
टूट चुकी हूँ बिखरना बाकी है

नाम- **किरण बिचपुरिया "कशिश"**
पता- W/O श्री पंकज बिचपुरिया
ई-196 देवेन्द्र नगर, सेक्टर-5
नारायणा हॉस्पिटल के पास, 492001
मो.- 8223994200

कार्यक्षेत्र- गृहणी, उपाध्यक्ष- देवेंद्र नगर एसोसिएशन की

दिवंगतो के लिए एक छोटी सी कविता

जिनकी सरहद पर जान गई
करो याद उन बालाओं को,
जिनकी इस रण में आन गई
करो याद उन माताओं को,
जिनके अपने प्रिय सूत खोये
करो याद उन बहनों को,
जो रक्षाबंधन पर शेयें
लहू बहा कर सीमाओं पर,
अमन चैन का फूल खिलाया.
अपने प्राणों की बलि देकर,
भारत माँ का मान बढ़ाया
सरहद पर मर मिटने वाले,
अजर अमर सब हो जायेंगे,
मर कर भी हम इन वीरों का,
कैसे क़र्ज़ चुका पायेंगे।

तमस घनेरा छट जायेगा

आशाओं की किरणें लेकर
नया सबेरा फिर आयेगा
छायेगा चहुँ ओर उजाला और
तमस घनेरा छट जायेगा
गुलज़ार होंगी महफ़िलें फिर से
रौनक होगी जीवन में
बैंड बाजे संग आयेंगी बारातें
और आँगन में शहनाई गूँजेगी
रोशन होगा बाजार फिर से
हर घर में रोटी पकेगी
चल पड़ेगी जिंदगी फिर एक बार
मायूसी की चादर हट जायेगी और
लहर खुशियों की दौड़ेगी
बस हौसला अपने अंदर चाहिए
कोई मुसीबत ना उसके सामने ठहरेगी
छा जायेंगी बदरी खुशियों की और
झूम के खुशियाँ बरसेंगी
बस थोड़ा सा सब्र है करना
हालातों से जम कर है लड़ना
तिमिर घनेरा छट जायेगा
आशाओं की किरणें लेकर
नया सबेरा फिर आयेगा।।

रस्ते कई हैं मंज़िल वही है

व्यक्ति कई मंजिल वही है,
बस चलते रहो।
आये जो दोराहे कभी,
गुमराह ना होना, घबराना नहीं
बस चलते जाना ...
अपनी राह पर, अपने मुकाम पर
हर पल आगे बढ़ते जाना।
आये जो पहाड़ कोई, रास्ता ना बदल लेना
काट के उस पत्थर को अपनी राह बना लेना।
आऐंगी मुश्किलें कई, राह आसान नहीं होगी,
दर्द होगा, तक़लीफ होगी,
लेकिन, मंज़िल भी वहीं होगी।
जो ना मिला उसका गिला ना करना,
हौसले बुलंद कर फिर कोशिश करना,
रकीब है वो, कुछ सोचा है उसने
बस यही मानकर फिर आगे बढ़ना।
पहुंचोगे एक दिन तुम उस मुकाम पर
वो मंज़िल तुम्हारी होगी,
जिसके हकदार हो तुम, वो जीत तुम्हारी होगी।
राह में चलते बस इतना ख़याल रखना
ना टूटे उम्मीद कभी, हौसला ना थमने देना
कदमों को बिना थके, बस यूँ ही आगे बढ़ने देना।।

दर्द

दर्द है, दर्द का इलाज कर,
कल में क्या रखा है, जो करना है आज कर।

भूल जो हुई आज ही अब कर इसे,
लहरों से आगे निकल अपनी नौका पार कर।

तू देख मत और किसको, देखना है खुद को देख,
यूँ निराश मत हो तू असफलता देखकर।

एक दिन यूँ आएगा, जीत तेरी होगी ही,
जीत जाऊंगा मैं, चल ऐसा सोचकर।

मनुष्य क्या कर सकता नहीं, सोच ऐसा रोज़ तू,
जीत आएगी कभी, मेहनत के आगे हारकर।।

इन्तेज़ार

एक ख़ामोशी कभी बहती है,
सूनी अकेली रातो में,
आँखों से परस्त्री से प्रेम करने वाला
एक बुराई कभी कहती है,
कानों में बार बार,
आएगी वो सुबह भी,
जिसका है इन्तेज़ार.
जब भी उदासियों के भंवर सीने में घुलते हैं,
परछाईयाँ ग़मों की जब आँखों में चलती है,
पलकों पर जुगनू के दिए,
आँखों में उम्मीदें लिए,
जिंदगी मुझे ख्वाबों में मिलती है,
टूटे हुए सपनों के टुकड़े
जब दिल में चुभते हैं,
मंजिलों का लंबा सफर,
जब तनहा गुजरता है,
कोई सुनहरी धुप बनकर,
ख्वाबों की शाखों से छनकर,
चुपके से मेरी रूह में उतरता है।।

रात के अंधेरे से

कभी कभी रहते चारों ओर
कठिनाइयों के घेरे से,
कुछ भी नजर नहीं आता जैसे
हो रात के अंधेरे से,
लगता है कि कैसे कोई
हल निकलेगा परेशानी का,
कोई दिखता नहीं रास्ता
डर लगता है किसी बड़ी हानि का,
फिर अंधेरे में एक उम्मीद की
किरण नजर आती है,
मुश्किल हो कोई भी किसी तरह
हल हो ही जाती है,
तब लगता है की हर अंधेरी
रात की एक सुबह होती है,
दिक्कतें भले हैं पर ये मजबूत
व्यक्तित्व की चुनौती है,
जो इन अंधेरो से सफलतापूर्वक
निकल जाता है,
वही जिंदगी का एक खूबसूरत और
मोड़ मंजिल पाता है।

नाम- **लीना शर्मा**
पता- बी-2/206, महालक्ष्मी एन्क्लेव,
बारं रोड, कोटा (राजस्थान)
पिनकोड-324001
फोन- 9351353119

श्रद्धांजलि

व्यथित है मन मेरा,,,
आज कैसी चली हवा,,,
एक ही झोंके से,,,
हो गई अम्मा जुदा,,,
कल तक बहारें साथ थी,
बांगवा भी था खिला खिला
आज खिजाओं का मंजर,,
क्या समय दिखा गया..
मौन है शब्द आज..
केवल अंतरद्वं है बोलता,,
कौन सी हवा का झोका,,
अम्मा को साथ ले गया।।

माँ

बौना अंबर..
छिछला सागर
प्रेम के तेरे आगे माँ!
क्षेत्रफल
धरती का भी कम,
तेरे आंचल के आगे माँ!!
नमन करता,
रब भी तुझको...
हम इंसा की क्या औकात!
लाखों दुआएं
पडती कम
इक तेरे आशीष के आगे माँ।
शीतलता, संदल की हैं कम।
तेरे स्पर्श के आगे माँ!!
सुंदरता, चँदा की फीकी...
तेरी मुस्कान के आगे माँ।
तेरी एक उंगली भर पकड़ूँ
सहारा फिर कोई क्यूँ हो!
सघनता वटवृक्ष की कम
तेरे साए के नीचे माँ।।

श्री कृष्ण योगी

ओ
कान्हा
ना रोको
राह मेरी
शाम भी ढली
बेला है गौधुली
अब घर जाने दो

माँ
भाभी
मारेंगी
सब ताना
कलाई छोड़ो
मटकी ना फोड़ो
अब घर जाने दो

तू
कैसा
छलिया
जादूगर
मनमोहना
ओ कृष्ण कन्हैया
अब घर जाने दो

ये
तेरी
बाँसुरी
क्यों रोकती
मैं सुध भूली
सपनों में झूली
अब घर जाने दो

मैं
तेरा
हूँ मेरी
प्रिय राधे
तू क्यूँ डरती
ये साँझ न होगी
मैं श्री कृष्ण योगी

खा
कर
कसम
बतलाना
कर बहाना
कौन मारे ताना
बाँसुरी छोड़ जाना

बंद दरवाजों पर दस्तख

नहीं पहचान उनसे कुछ, ख्वाब में रोज आते हैं
बंद दरवाजों पर दस्तक, दिल के मेरे दे जाते हैं।

नहीं कोई गिला उनसे, नहीं कोई शिकायत है
जरा सा मुस्कुरा कर वो, शरारत कर ही जाते हैं।

ना उनको टूट कर चाहूँ, ना उनका नाम मैं जानू
न जाने क्यूँ समाए फिर भी, मेरे दिल में जाते हैं।

करूँ तो क्या करूँ अब मैं, दिल की कहूँ किससे
बताए बिन बात मेरी, भाँप वो खुद ही जाते हैं।

चलो जिद छोड़ दो लीना, जिंदगी चार दिन की है
बढ़ाकर हाथ अपना आज, दोस्ती कर ही आते हैं।।

भावनाएँ

देखो!!
भावनाओं की भी,,
एक विशेषता होती है.
कि... अनदेखा भी देख लेती हैं।
परंतु,, मैंने भावना का,,,,
उपयोग और अनुपयोग,
दोनों होते देखा है।
लोगों के हाथों,,,
कोई भावनाओं को जगाता है
कोई न्यायसंगत तर्क दे,,
समझाता है
कोई भावनाओं से कमाता है,
और कोई उकसाता है,
हाँ..ये सोच लिया मैंने
इनको अपनी कमजोरी
कतई नहीं बनने दूंगी,,
किसी मोड़ पर भी,,, नहीं
क्योंकि
भावनाओं को,, कमजोरी बनते
देर नहीं लगती

लेवल

आशा भरी,, किरणों को
मन की कोख में रख
भविष्य की लिखूँगी लोरियाँ
भटकन को,,, मेरे ही मन की
प्रेम की,,, पहना दूँगी बेड़ियाँ
लेवल अपना
पल-पल क्यूँ बदलता?
मतवाला बन मन मेरा
मुकरे जरा-जरा देर में
बदले अपनी ही बोलियाँ
कभी कहे,,,
जमीन से जुड़ी चल
दूजे पल
दुपहिया वाहन चढ़
तीजे पल,,,
बदले फिर लेवल
अब कहे
हवा से बातें कर
मैं कहती,,,
क्यों नहीं हो टिकते
तुम कुछ देर भरोसे पर
क्यूँ मैं इतने,,, साधन बदलूँ
ए,,, मन!! पहले
खुद पर तो यकीन कर

नाम - **सुश्री रमा देवी तेकाम**
साहित्य नाम - रमा प्रेम-शांति
वर्तमान पता - बालाघाट (म.प्र.)
मोबाइल न. - 8458932800
कार्यक्षेत्र - शासकीय शिक्षक

मानवता

माना, बीते कल ने बेहद तांडव मचाया,
माना, हम सबको उस ने बहुत ही रूलाया,
माना, हम सब ने खोया अपनों को "रमा",
लेकिन.... इसी कल ने विज्ञान का महत्व बताया,

प्रकृति शक्ति ही है महान इसी कल ने बताया,
अंधविश्वास, झूठ, फरेब, ढोंग से पहचान कराया,
कोरोना महामारी ने समझा सभी को समान "रमा"
और मानव जाति को मानवता का पाठ पढ़ाया।

दीदी जी

शांत, सुंदर स्वभाव की आप
फिर भी सबको यूँ रूलाओगी,
कभी सोचा ना था हमने
सबसे पहले आप चली जाओगी,

इस तरह चुपचाप आप
हम सबको छोड़ जाओगी,
कभी सोचा ना था हमने
सबसे बिना मिले चली जाओगी,

बहुत हिम्मत वाली थी आप
दवा से ठीक हो जाओगी,
कभी सोचा ना था हमने
अस्पताल से ही चली जाओगी,

बहुत याद आती हो आप
नहीं किसी से भूली जाओगी,
कभी सोचा ना था हमने
इतना याद आप फिर आओगी।

कैलाश दादा

काव्य प्रेमियों की
महफिल बनाकर
बहुत अच्छे से
आपने सजाया था दादा,
मुख्य मुखिया की
भूमिका आपने
बहुत अच्छे से
निभाया था दादा।

अन्तर्राष्ट्रीय ऑनलाइन
काव्य गोष्ठी
लॉकडाउन में भी
आपने कराया था दादा,
प्रसिद्ध राष्ट्रीय कविवर भी
अपनी महफिल में
आपके मात्र कहने से ही
सभी उपस्थित हुए थे दादा।

छोटे-बड़े सबकी
कविता, गीत, गजल
बड़े प्यार से

सुनते थे आप दादा,
मुखिया का फर्ज
सबको दाद देकर
हौसला सबका
बढ़ाते थे आप दादा।

अब तो हो गई
सूनी पूरी महफिल
आपके जाने से
सच में दादा,
कौन? हमें अब
बड़े प्यार से
रमा बेन कहकर
पुकारेगा मेरे कैलाश दादा।

नया भोर है

लाख परदे, परहेज पर रहे, फिर भी दवा काम ना आई,
हजारों मंदिर, मज्जिदो में दुआ मांगी लेकिन दुआ काम ना आई।

इस समय धरती पर कोरोना महामारी का आतंक देखो,
बड़े-बड़े लोगों के भी होश उड़े चालाकी काम ना आई।

माना इस समय चारों ओर बड़ा शोर है
कोरोना महामारी का चारों ओर बड़ा जोर है।

दहशत भरी है मानव जीवन में और मौत का शोर है
मत हो उदास मन आने वाले कल में एक नया भोर है।

जो हमसे जल्दी विदा ले लिए, करो प्रार्थना अब उनके लिए,
मन शांत हो उन सबका, जो करते थे प्रार्थना कभी हमारे लिए।

प्रार्थना

बहुत हो गया अब तेरा खेल भगवान,
मत कर हम मानव को तू परेशान,
एक विनती एक प्रार्थना करे हम सब,
कोरोना महामारी से छुटकारा दे हे भगवान।

चुन-चुनकर धरती से मानव ले गया है तू
अपनी बगिया का उनको बनाया है फूल अब तू
दुखी होंगे बहुत वो सब अपने परिवार से बिछड़ के
खुश रखना उन सबको भगवान अब तू ।

हम सबके परिवार को भी हिम्मत दे तू
हमारे परिवार के सदस्यों को जो ले गया है तू
हर पल बहुत खलती है उन सब की कमी हम सबको
बहुत याद आते है वो सब लोग जिन्हे ले गया है तू ।

नाम- **अजय पाण्डेय, 'बेबस'**
पता- चेटर, पोस्ट-जिला -गुमला
झारखंड, पिन 835207
मो.- 9973101940

श्रद्धांजलि

काल की काली साया में, आज जो गम के आँसू हैं।
श्रद्धांजलि उनके लिए, जिनके नाम गिरते आँसू हैं।।

मिले अब आत्मबल, उन लोगों को जिन्होंने अपना खोया।
ईश्वर शांति दे उन्हें, जिन्होंने अपनों से अपनों को खोया।।

मिलते ढाढ़स और सांत्वना, कि काल का खेल रहा।
नीयति के आगे सब हारा है, जो जीवन यह झेल रहा।।

जो शेष हैं उनपर प्रभु कृपा, हम सबों की कामना है।
जो गए वो आएँगे फिर से, सोचें यही जीवन साधना है।।

श्रद्धांजलि के दो शब्द कम, दूँ और क्या सांत्वना में।
ईश्वर उन्हें शांति दें आज, मेरी अपनी ये कामना में।।

फ़िलहाल इसी कोरोना काल की बात है

आज की तारीख 07/05/2021 से पिछले 15 से 20 दिन पहले की बात है। मेरे फुफेरे भाई की तबियत बहुत ही खराब हो गई।

कोरोना का पहला सूई ले चुका था, बावजूद वह बुखार से पीड़ित हो चला। दो चार दिन स्वयं के हौशला में हल्की-फुल्की दवाइयाँ लेने लगा था। जब पीड़ा असहाय हो गया तो उसे डॉक्टरों के पास ले जाया गया। पर कुछ ऐसे भी डॉक्टर होते जो अपना निजी प्रोटोकॉल रख चलते।

हर डॉक्टर ने जाँच करने से ही पीछे हटने लगे। तब आखिर में शहर के एक निजी हॉस्पिटल में प्रयास किया गया।

भगवान की लाख सुक्रिया वहाँ एडमिशन हो गया। जाँच के बाद डॉक्टर ने कहा इन्हें टायफाइड हो गया है। कोरोना का भी जाँच करा लेते हैं।

मैंने भाई की पत्नी से फोन पर बात किया और कहा- बेटा घबराना नहीं और तुम हमेशा साथ रहना। मैं डॉक्टर के दवा के अतिरिक्त कुछ जो बोल रहा हूँ उसको भोजन के साथ देना।

वही हुआ भी इलाज और हौशला दोनों साथ चलने लगा।

चार दिन के बाद कोरोना रिपोर्ट भी आया जिसमें वह पोसिटिव पाया गया।

सरकारी हॉस्पिटल से सलाह भी आया कि उन्हें covid केंद्र भेज दें। बहु ने मुझसे सलाह ली तो मैंने कहा- जी नहीं। जहाँ इलाज चल रहा है वहाँ से निकलना नहीं है। वहीं ठीक हो जाएगा। तुम हौशला बनाये रखो और covid

के डर से वहाँ से निकलना मत। न तुम्हें कुछ होगा न भाई को।।

अगले सप्ताह सब ठीक हो गया। Covid भी समाप्त और बुखार- खाँसी सब समाप्त।

आज भाई और उसका परिवार स्वस्थ घर पर हैं।

संस्मरण 06/05/2021

मेरे विद्यालय के प्राचार्य ने अपने घर की सच्ची घटना का फोन से वार्तालाप पर कहा।

हुआ यह था कि प्राचार्य महोदय का घर गाँव में है और वो अपने परिवार के साथ शहर में रहते हैं। शेष अन्य गाँव में ही रहते हैं।

शहर से गाँव की दूरी लगभग 40 किलोमीटर है। गाँव से प्राचार्य को फोन आया तो पता चला उनकी चचेरी बहन और दामाद बीमार हैं और रो रहे हैं। कोरोना का भय उनके दिमाग में घर कर गया था।

खैर!! प्राचार्य महोदय अपने परिवार के साथ कुछ जरूरी दवाइयाँ लेकर गाँव पहुँचे।।

जैसे ही घर पहुँचे की उनकी बहन और दामाद दोनों रोने लगे। वो बोलने लगे कि हम सबको कोरोना हो गया है सो आप सब दवा लाकर दे दीजिये और किसी पेड़ के नीचे खटिया लगवा दीजिये।

प्राचार्य महोदय ने उन दोनों से कहा- हर बीमारी कोरोना ही हो जरूरी थोड़े है। यदि होगा भी तो हम इलाज कराएँगे। पर रोना-धोना छोड़ ये जो दवाइयाँ दे रहा हूँ उसे खाओ। उम्मीद है कल तक सब बीमारी खत्म।

प्राचार्य महोदय के इन हौसलों वाली बात से दोनों के दिल में साहस जगा। और फिर वही हुआ जो होना चाहिए।

हौसला दवाई बना और जो दवाई खाने को दी गई थी उसे दोनों खाये जिससे दूसरे दिन ही दोनों स्वस्थ हो गए।

न बुखार रहा, न सिर दर्द। फिर उन्होंने ही प्राचार्य को अपने स्वस्थ होने की सूचना दिया।

परिवार के सभी लोग निश्चिन्त हो गए।।

सकारात्मकता की सोच को बढ़ाने के लिए हम इंसान ही नहीं दूसरे अन्य जीव भी इसका सहारा लेते हैं।

संस्मरण

एक दिन की बात है मैं अपने मकान के छत पर बैठा था। पूरब दिशा की ओर मुँह किए बैठा कुछ सोच रहा था कि मेरे घर बसे कबूतरों में से एक कबूतरी अपने दो नन्हें पर पंख निकल आये थे उनको लेकर सामने दूसरे की मकान की छत पर जा बैठी।

फिर मैंने देखा कि वह कबूतरी पहले एक बच्चे को उड़ने के लिए प्रोत्साहित करने लगी।

कबूतर का बच्चा डरा हुआ पर एक कोशिश में अपना पंख फड़फड़ाकर उसी जगह रहा। उड़ नहीं सका। कबूतरी का दूसरा प्रयास भी असफल रहा।

फिर तीसरे प्रयास में कबूतर का बच्चा कुछ दूरी तक उड़ा जिसके साथ माँ भी उड़कर हौसला बढ़ती रहती।

मैंने देखा आगे चौथे दिन से कबूतर के दोनों बच्चे स्वतन्त्र हो उड़ने और दाना चूगने मेरे घर के आंगन में उतरने लगे।।

एक माँ का सकारात्मक सोच और हौसला उन बच्चों के लिए जीवन हो गया।।

संस्मरण वर्ष 2010

मैं अपनी पुत्री का डेंटल कॉलेज में नाम लिखाया। बाबा भीम राव अंबेडकर डेंटल कॉलेज पटना। कॉलेज के भवनोंऔर कार्यालयों को देखकर मुझे लगा कि यहाँ पढ़ाई के साथ साथ अनुशासन भी होगा। जो था।

लड़कियों का होस्टल भी कॉलेज में ही था। सुरक्षा के मामले में बहुत मजबूत।

मैं निश्चिन्त हो गया। यह सोचकर कि बेटी को कई सहेली उसी दिन बन गए।

दूसरे दिन मैंने अपनी बेटी के साथ किताब दूकान गया किताब लेने। दुकानदार ने जब किताबें निकाल कर सामने देखने के लिए रख दिया तो मेरा होश ही गायब।

बेटी हिंदी मीडियम से पढ़ी थी और किताबों को देख रहा हूँ तो सबके सब अंग्रेजी मीडियम।

बेटी ने कुछ नहीं कहा बल्कि सभी किताबें जरूरत का ले ली।

फिर क्या था। कक्षाएँ आरम्भ हो चली। मैं भाषा को लेकर जितना चिंतित था उतनी बेटी नहीं थी। उसके असफलता को लेकर मैं नकारात्मक हो चला था। पर बेटी की सकारात्मक सोच और मेहनत ने रंग लाई।

आज बेटी डॉक्टर है।।

इसे संस्मरण कहूँ या आलेख**पर

किसी एक दिन की बात है मैं अपने ही घर के आँगन में बैठा था और एक मोटा सा चूहा आंगन में ही इधर-उधर घूमकर चिड़ियों के छोड़े हुए दानों को खा रहा था।

किसी खतरे से अनजान वह चूहा विल्कुल निश्चिन्त होकर बचे खुचे अनाजों को चुन रहा था। चूहे पर कोई खतरा भी मंडरा रहा है इसका आभास मुझे भी नहीं था।

कुछ ही मिनट बीता होगा कि मैंने भी खतरे को देख लिया। पड़ोस घर की एक काली बिल्ली धीरे-धीरे चूहा को झपटने अपना पाँव बढ़ा रही थी।

मुझे लगा कि आज चूहा का अंत होना तय है।

पर क्या??

घोर आश्चर्य!

मैंने देखा कि चूहा जो खतरे से अनजान दाना उठा कर खा रहा था वह अचानक खड़ा हो गया। बिल्ली को देख चूहा भी घों घों जैसा आवाज निकाला। बिल्ली भी सहम गई।

कुछ देर के लिए बिल्ली स्थिर हो इधर-उधर देखने लगी पर चूहा डरा नहीं। वह अपना खाना खाने में मशगूल रहा।

फिर बिल्ली जैसे ही पाँव आगे बढ़ाने की सोची कि चूहा ही तेज गति से बिल्ली की ओर दौड़ा।

चूहे की इस साहसी और आक्रामक रवैये से बिल्ली डर कर भाग गई।

मुझे आज पहली बार इस तरह का दृष्य देखने को मिला। हिम्मत और सकारात्मक मन से दुश्मनों को हराया जा सकता है।

चाहे बीमारी हो या फिर सेंधमारी।। परिस्थिति चाहे जितना भी विपरीत हो जाये जीने और कुछ करने के हौसलों से दूर नहीं भागना चाहिये।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान, है प्रमाण देशभक्ति का.. आइए करें सृजन, शब्द से शक्ति का...

15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9424765259, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

978-93-90995-30-1

मूल्य 250/-